Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

# अम्बेडकर नगर में जनसंख्या स्थानान्तरण का प्रभाव

**Abhishek Kumar Tiwari[1]* Dr. D. N. Singh[2]**

[1] Research Scholar

[2] Principal & Associate Professor, Hindu P.G. College, Zamania, Ghazipur, Uttar Pradesh

***सार –*** ***जनसंख्या का स्थानान्तरण, देशान्तरण या प्रवसन से तात्पर्य मानव समूह अथवा व्यक्ति के भौगोलिक स्थान सम्बन्धी परिवर्तन से है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार 'प्रवसन एक प्रकार की भौगोलिक प्रवसित अथवा स्थानिक प्रवसिता है। जो एक भौगोलिक इकाई और दूसरी भौगोलिक इकाई के बीच देखने को मिलती है। जिनमें रहने और पहुँचने का स्थान दोनों भिन्न होते हैं। इस प्रकार प्रवसन स्थायी होता है, क्योंकि इसमें मानव का निवास स्थान स्थायी रूप से परिवर्तित हो जाता है। प्रवसन किसी देश विशेष की जनसंख्या के आकार-वितरण, संरचना को तुरन्त प्रभावित करने वाली एक घटना है, जिससे शीघ्र और आकस्मिक रूप से परिवर्तन आते हैं। जिनकी कल्पना एवं अध्ययन दोनों ही अत्यन्त कठिन हैं। प्रवसन किसी राष्ट्र के आर्थिक उतार-चढ़ाव एवं राष्ट्रीय घटनाओं से गहन रूप से सम्बन्धित होता है। व्यक्तियों का एक स्थान से दूसरे स्थान अथवा देशों को जाना जनसंख्या एवं संरचना में परिवर्तन है।***

----------X----------

## प्रस्तावना

मानव जीवन के विकास का मूल स्रोत प्रवासध्स्थानान्तरण ही रहा। प्रवास शब्द अंग्रेजी के 'माइग्रेशन' शब्द का ही रूपान्तर है। इसे स्थानान्तरण व देशान्तरण नामों से भी पुकारा जाता है। प्रवास का शाब्दिक अर्थ है 'देशान्तरध्स्थानान्तरण- निवास करना, अर्थात् एक मूल निवास स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाकर निवास करना'। दूसरे शब्दों में प्रवास का आश्रय किसी प्रदेश व देश की जनसंख्या दूसरे प्रदेश व देश में आने-जाने अर्थात् स्थानान्तरण से है। स्वदेश के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानान्तरण को आन्तरिक प्रवास कहा जाता है। 'ली' महोदय ने स्थानान्तरण को व्यापक रूप से परिभाषित करने का प्रयास किया है। वे स्थानान्तरण को अर्द्ध स्थायी व स्थायी प्रवास मानते हैं और दूरी को अधिक महत्व देते हैं।

## जनसंख्या स्थानान्तरण

'ली' महोदय ने उक्त परिधि में अन्य प्रकार की मानव गतिशीलता यथा- एक नगर के भीतर आवासीय परिवर्तन नगर एवं उपान्त के बीच दैनिक स्थानान्तरण, प्रवासी श्रमिकों को मौसमी स्थानान्तरण, पर्यटकों की अस्थायी एवं कर्महीन गतिशीलता, चरवाहों तथा जंगली जातियों के परिभ्रमण तथा अन्तर्ग्रामीण स्तर को कोई महत्व नहीं दिया गया है। जिसके परिणाम स्वरूप यह परिभाषा परिपूर्ण प्रतीत होती है।

बाग 'Bogue' महोदय ने उसी प्रवास परिवर्तन को स्थानान्तरण कहा है जिसके परिवारों का पूर्ण आवास परिवर्तन ही नहीं दूसरे समाज में पूर्णतया समायोजन भी हो गया है। यहाँ भी स्थायी संचालन को छोड़ दिया गया है।

जेलिंसिकी महोदय संचलन के अन्तर्गत अधिकांश गतिशीलता विशेषतः अल्प दूरी की गतिशीलता एवं बार-बार या चक्रीय प्रकृति को ही समाहित किया जा सकता है। जिसमें किसी स्थायी, दीर्घावधि, आवास परिवर्तन का अभाव होता है।

इस प्रकार यह एक व्यक्ति प्रवासी के रूप में प्रयुक्त होता है। अतः सम्पूर्ण विषय में वह सबसे गूढ़ तत्व होता है। इसमें आश्चर्य नहीं कि जनसंख्या के अन्य गुणों की तुलना में स्थानान्तरण के सर्वाधिक प्रकार के अर्थ प्रयुक्त किये गये हैं। यह भी सत्य है कि क्षेत्रीय गतिशीलता में सभी प्रकार के क्षेत्रगत संचलन सम्मिलित हैं।

जनसंख्या के स्थानान्तरण अथवा प्रवसन के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किसी देश विशेष की जनसंख्या के विकास में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना है। जिससे कि उस राष्ट्र की जनसंख्या का आकार क्या है? कितनी श्रम शक्ति आर्थिक कार्यों के लिए उपलब्ध है? और आर्थिक नियोजन किया जा सके। मानव समूह किसी स्थान अथवा क्षेत्र से प्रवास करता है तो यह सामाजिक परिवर्तन का एक मुख्य

www.ignited.in

चिन्ह माना जाता है। अधिकांश देशों का अनुभव है कि औद्योगीकरण अथवा आर्थिक विकास के साथ-साथ कृषि क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों अथवा एक नगर से दूसरे नगर अथवा एक देश से दूसरे देशों को मानव समूह का प्रवसन आरम्भ होता है। एशिया और लैटिन अमेरिका के देशों में तकनीकी परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप मानव समूह का स्थानान्तरण ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर हुआ, जिसके कारण अनेकमहानगरों का जन्म हुआ। आदिकाल से मानव हर समूह एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रवास करता रहा है। वास्तविकता तो यह है कि जनसंख्या के विकास का आधार ही मनुष्य का स्थानान्तरण है। जब यह स्थानान्तरण बड़े पैमाने पर होता है तो कई महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं।

## स्थानान्तरण के नियम

मानव प्रारम्भ से ही घुमक्कण किस्म का गतिशील प्राणी रहा है। अतः प्रवजन मानव व्यवहार का मानव रूप है। मनुष्य कई कारणों से प्रवास करता है। कुछ लोग रोजगार की तलाश में दूर जाकर बस जाते हैं, कुछ प्राकृतिक प्रकोपों से रक्षा हेतु, कुछ महामारी आदि की बीमारियों के प्रकोप से भयभीत होकर एक स्थान से दूसरे स्थान को चले जाते हैं। जनसंख्या भूगोल में स्थानान्तरण सम्बन्धी कोई निश्चित तथ्य प्रकट करना एवं उसका निर्धारण करना कठिन है। क्योंकि:-

1. जनसंख्या गतिशील तत्व है।
2. मानव का व्यक्तिगत व्यवहार किसी नियम से आबद्ध नहीं है।
3. स्थानान्तरण सम्बन्धी सही आंकड़े नहीं प्राप्त होते।

जनसंख्या भूगोल के गुणों में स्थानान्तरण सबसे जटिल गुण है, क्योंकि किसी व्यक्ति के स्थानान्तरण निर्णय के पीछे कोई निश्चितता नहीं होती है। अतः स्थानान्तरण से सम्बन्धित आंकड़े या तो प्राप्त नहीं होते है, प्राप्त भी होते हैं तो संदेहास्पद होते हैं। इसलिए हम्फ्रीज ने कहा है कि 'माइग्रेशन वाज रैदर डिस्टिंग्यूज्ड फार इट्स पापुलेशन दैन फार है विंग ऐनी डिफनिट लॉ' जिसका उल्लेख आर0 सी0 चान्दना ने अपनी पुस्तक 'इण्ट्रोडक्शन टू पापुलेशन ज्योग्राफी' में किया है।

सन् 1940 में एस0 ए0 स्टोफर ने 'इण्टर वेनिंग अपारच्यूनिटी' नामक संकल्पना का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार सुअवसरों की संख्या अधिक है तो जन स्थानान्तरण अधिक होगा और सुअवसरों की संख्या कम होने पर जनस्थानान्तरण कम होगा। इस प्रकार उन्होंने जन स्थानान्तरण में दूरी को महत्व न देकर सुअवसरों की उपलब्धता को अधिक महत्व दिया है। इ0 रैवस्सटीन महोदय का एक शोध पत्र 'द लाज आफ माइग्रेशन' 1885 में प्रकाशित हुआ। जिसके अनुसार स्थानान्तरण के नियम सारांश रूप में निम्नवत् हैं।

## स्थानान्तरण व दूरी

जैसे-जैसे दूरी बढ़ती जाती है प्रवासियों की संख्या वैसे-वैसे कम होती जाती है। लम्बी दूरी के स्थानान्तरण के पीछे उद्योग और व्यापार की प्रवृत्ति होती जाती है।

### (ख) विश्राम स्थान द्वारा स्थानान्तरण

1. जन स्थानान्तरण धाराओं में होता है।
2. औद्योगिक केन्द्र और ग्रामीण क्षेत्र के मध्य जो खाली स्थान होता है। वह दूरस्थ जनपदों से आवासित लोगों द्वारा भरा जाता है।
3. फैलाव की प्रक्रिया आत्मसात की प्रक्रिया के उल्टी होती है।

### धाराएं एवं प्रतिधाराएं

जनसंख्या स्थानान्तरण की प्रत्येक मुख्य धारा के पीछे क्षति पूर्ति के लिए प्रतिधारा चलती है।

जनस्थानान्तरण के पीछे नगर और ग्राम में अन्तर के कारण झुकाव

ग्रामीण लोगों की तुलना में नगरवासी अपेक्षाकृत कम स्थानान्तरण करते हैं।

### (च) जन स्थानान्तरण में स्त्रियों का आधिक्य

अल्प दूरी के जन स्थानान्तरण में स्त्रियों की संख्या अधिक होती है।

### (छ) प्रविधि और जन स्थानान्तरण

प्रविधि के स्तर में उन्नति में जनस्थानान्तरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है।

### (ज) आर्थिक प्रवृत्तियों की प्रधानता

जन स्थानान्तरण को प्रभावित करने वाले कारकों में आर्थिक प्रवृत्तियां सर्वाधिक प्रभावशाली होती है। प्रवास सम्बन्धी

www.ignited.in

रेवेन्सटीन के नियम अधिकांश रूप में मान्य हैं। तथा अध्ययन क्षेत्र में समय की कसौटी पर खरा उतरा है। लगभग सभी नियम यहाँ लागू प्रतीत होते हैं।

**स्थानान्तरण के प्रकार**

स्थानान्तरण का र्गीकरण उसके उद्देश्यों और प्रयोजनों, लम्बी व अल्प दूरी, दीर्घावधि व अल्पावधि समय तथा क्षेत्र व सीमा (आन्तरिक व अन्तर्देशीय, व राष्ट्रीय) आदि के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में किया जाता है।

1. उद्देश्यों पर आधारित वर्गीकरण
2. दूरी पर आधारित वर्गीकरण
3. समय पर आधारित वर्गीकरण
4. क्षेत्र व सीमा पर आधारित वर्गीकरण

**उददेश्यों पर आधारित वर्गीकरण**

प्रवास या स्थानान्तरण उद्देश्यों एवं प्रयोजनों के आधार पर तीन भागों में बांटा जा सकता है।

**(क) अचेतन प्रवास**

जिसे अचेतन प्रवास भी कहते हैं। यह वह प्रवास है जो मानव के विकास की प्रारम्भिक अवस्था में मानव जाति द्वारा रोजी-रोटी के लिए किया गया था। सम्प्रति घुमक्कड़ एवं जनजातियों का प्रवास इस श्रेणी में आता है। इसे आर्थिक स्थानान्तरण व प्रवास की संज्ञा दी जा सकती है।

**(ख) अनिवार्य प्रवास व अनिवार्य संचलन**

वह प्रवास है जो किसी दबाव वश किया जाता है। जैसे देश निकाला, जिले या देश से निष्कासन के आदेश पर किया गया प्रवास।

**(ग) ऐच्छिक प्रवास व ऐच्छिक संचलन:**

वह प्रवास है जो ऐच्छिक संगठनों द्वारा, यात्रियों द्वारा, अधिकारियों द्वारा विविध प्रयोजनों की पूर्ति हेतु किया जाता है।

दूरी पर आधारित वर्गीकरण

दूरी के आधार पर प्रवास दो प्रकार का होता है।

**(क) समीपस्थ या अल्प दूरी प्रवास**

मूल निवास स्थान से 10 या 20 किलोमीटर की दूरी पर रहना अल्प दूरी प्रवास के नाम से पुकारा जा सकता है।

**(ख) दूरस्थ या लम्बी दूरी प्रवास**

मूल निवास स्थान से काफी दूरी पर जाकर रहना दूरस्थ प्रवास कहलाता है। जैसे रू मुम्बई, कलकत्ता, नई दिल्ली आदि का प्रवास।

**समय पर आधारित प्रवास**

लोगों के निवास की समयावधि के आधार पर प्रवास को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

**(क) दीर्घावधि प्रवास**

वह प्रवास है जहाँ लोग काफी समय तक निवास करते हैं। जैसे मूलस्थान को छोड़कर दिल्ली, मुम्बई, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि में काफी दिनों तक बस जाना आदि।

**(ख) अल्पावधि प्रवास**

वह प्रवास है जहाँ लोग अल्प समय तक ही निवास करते हैं। जैसे अम्बेडकर नगर से दिल्ली के लिए 4 दिनों का प्रवास इसी श्रेणी में आयेगा।

**क्षेत्र व सीमा पर आधारित प्रवास**

इसे निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है।

**(क) आन्तरिक या अन्तर्देशीय प्रवास**

एक देश की सीमा के भीतर होने वाले सम्पूर्ण स्थानान्तरण को आन्तरिक या अन्तर्देशीय प्रवास कहते हैं। इसे स्थायी एवं अस्थायी दो उपवर्गों में बांटा जा सकता है। स्थायी अन्तर्देशीय प्रवास को पुनः दो भागों में बांटा जाता है।

1. ग्रामीण से नगरीय प्रवास
2. प्रदेश से प्रदेश प्रवास

अस्थायी प्रवास भी चार उपवर्गों में विभक्त किया जाता है।

www.ignited.in

**1. ऋत्विक प्रवास (मौसमी प्रवास)**

यह एक विशेष मौसम में होने वाला प्रवास है। यथा- फसल केसमय परीक्षा के समय।

**2. सर्वाधिक प्रवास**

यह किसी निश्चित अवधि तक किया जाने वाला प्रवास है। जिसमें अध्ययन, सम्मेलन, व्यापार आदि के कारण किया जाता है।

**3. दैनिक प्रवास**

वह प्रवास है, जो प्रतिदिन समान रूप से होता है। नौकरी, शिक्षा, व्यापार आदि के कारण हैं।

**4. आकस्मिक प्रवास**

बीमारी, मुकदमा, उत्सव, मेला आदि कारणों से हुए प्रवास इस श्रेणी में आते हैं।

**(ख) अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास व स्थानान्तरण**

राष्ट्रीय सीमा पार करके विभिन्न राष्ट्रों में निवास करना अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास कहलाता है। जैसे- भारत से ब्रिटेन, अमेरिका आदि विदेशों में जाकर निवास करना अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास है। ऐसे प्रवास में लोग अपनी संस्कृति, भाषा तथा व्यवसाय को प्रायः त्याग देते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास सामाजिक, आर्थिक एवं जनांकिकीय तत्वों से मूलरूप से प्रभावित होते हैं। ऐसे प्रवास से अनेक समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। जिनमें अधोलिखित दो समस्यायें निम्नलिखित हैं।

1. स्वीकार करने वाले राष्ट्र की मनोवृत्ति,
2. राष्ट्रों में बेकारी तथा आर्थिक जनसंख्या के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास हेतु विवशता।

उपर्युक्त वर्गीकरण को तालिका रू 1 द्वारा सरलता से प्रकट किया जा सकता है। बेरेल्सन ने चार व्यवहारात्मक श्रेणी में मान्यता प्रदान की है जो गतिशील परिवर्तन को प्रभावित करता है जो क्रमशः आर्थिक, राजनैतिक, वातावरणीय, सामाजिक कारक हैं। ये व्यवहारिक श्रेणियाँ जीवन निर्माण के गुणों की रचना करने में अन्तःक्रिया करते हैं जिनमें 4 गतिशील तत्व हैं। जनसंख्या का आकार, जनसंख्या वृद्धि दर, जनसंख्या का मिश्रण तथा क्षेत्रीय जनसंख्या वितरण इसलिए जनसंख्या नीति निर्धारण के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक तत्वों में आपसी सम्बन्धों का ज्ञान व भौगोलिक विभिन्नता अति आवश्यक है।

**तालिका संख्या 1 जनसंख्या का स्थानान्तरणः 2018**

| मद | पुरूष | महिला | कूल |
|---|---|---|---|
| | 2015 | 2016 | 2017 |
| गणना के जिले में अन्यत्र पैदा हुए | 70.52 | 66.00 | 68.61 |
| राज्य के अन्य जिले में पैदा हुए | 28.62 | 32.70 | 30.32 |
| भारत के अन्य प्रान्तों में पैदा हुए | 0.47 | 1.20 | 1.05 |
| कुल स्थानान्तरण | 0.39 | 0.01 | 0.02 |

स्रोत-जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 2001, 2008, 2018 (भारत, उत्तर प्रदेश कल्चरल एण्डमाइग्रेशन टेबुल, सोशल एण्ड कल्चरल टेबुल)।

वीनर ने प्रवासी प्रक्रिया को परिवर्तित करने के लिए 3 प्रमुख कारक प्रस्तुत किये हैं- 1. शहरीय सघनता व नगरीय करण की अन्य समस्यायें, 2. समुदाय की वर्तमान सामाजिक व आधारभूत संरचना को सुरक्षित रखना, 3. सरकारी नियन्त्रण में वृद्धि क्षेत्रीय व जनसंख्या पर नियन्त्रण इसके लिए एक अन्य नीति जोड़ी जा सकती है। श्रम का पुनः वितरण कुशल और अकुशल ग्रामीण क्षेत्रों में व शहरी क्षेत्रों में।

डी0 आहूजा ने प्रवासियों के अध्ययन में यह पता लगाया कि दिये गये आर्थिक अवसर से तो प्रवासी पीछे नहीं हटा। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि आर्थिक अवसर पर प्रकृति पर निर्भर रहना और निश्चित सामाजिक और सांस्कृतिक आधार पर प्रवासी स्थानान्तरण करता है। उन्होंने इस तथ्य की खोज किया कि भूमि की कमी या जमीन का कम होना या जमीन का असमान वितरण, कृषि का व्यापारीकरण, शहरों तक पहुँच और सड़कों गांवों में नकदी फसल उगाने की अज्ञानता स्थानान्तरण के लिए कारक बनती है।

देशमुख ने दिल्ली के कुछ गांवों में अध्ययन किया और इन्हें पता लगा कि बेरोजगारी दर और स्थानान्तरण दर में पूर्ण सहसम्बन्ध पाये जाते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर वे ही नहीं पा सके जिनके पास जमीन का अभाव है और स्थानान्तरण करने में क्या सम्बन्ध है ग्रामीण विकास योजना का प्रभाव स्थानान्तरण में लिया जाना चाहिए। यदि मूल स्थान का विकास हो तो स्थानान्तरण की दर कम होती है।

कोनेल को पता लगा कि निरक्षरता का ग्रामीण स्तर पर अधिक प्रभाव पड़ता है लेकिन वे गांवों का आकार और

www.ignited.in

स्थानान्तरण की दर में सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सके। जैसा कि अन्य देशों में ऐसा पाया गया था। इन्होंने शोध किया कि अधिकतर प्रवासी प्रौढ़ पुरूष हैं।

## प्रवास व स्थानान्तरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

स्थानान्तरणध्प्रवास को प्रभावित करने वाले कारकों को मुख्यतः निम्नलिखित भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. प्राकृतिक कारक
2. आर्थिक कारक
3. राजनैतिक कारक
4. धार्मिक कारक
5. सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक
6. अन्य कारक

### 1. प्राकृतिक कारक

प्राकृतिक कारकों के अन्तर्गत अति वृष्टि, अनावृष्टि, अकाल, महामारी, भूकम्प आदि प्राकृतिक कारणों से प्रवास सम्बन्धी होने वाली घटनायें आती हैं। जिनके फलस्वरूप व्यापक रूप से स्थानान्तरण होता है। कभी-कभी उत्तम जलवायु के लाभ हेतु भी स्थानान्तरण व प्रवास पर लोग आते हैं और जाते हैं।

### 2. आर्थिक कारक

जनसंख्या अधिक हो जाने पर खाद्य सामग्री के अभाव की स्थिति में भोजन, वस्त्र एवं मकान की तलाश में प्रायः लोग स्थानान्तरण कर प्रवास करते रहते हैं। भारत पर विदेशी आक्रमण आर्थिक उदाहरण के ज्वलन्त प्रमाण हैं। इन आर्थिक कारकों में अनुकूल एवं प्रतिकूल दोनों प्रकार के तत्व समाहित हैं। जैसे रोजगार के श्रेष्ठ अवसर की खोज के लिए किया गया प्रवास जहाँ अनुकूलतम की श्रेणी में आता हैं। वहीं राष्ट्रीय साधनों या उनसे प्राप्त होने वाली वस्तुओं की कीमतों में कमी किसी उद्योग की असफलता, खानों और वनों की समाप्ति, छटनी के कारण उत्पन्न बेरोजगारी आदि के फलस्वरूप किये गये स्थानान्तरण प्रतिकूल तत्व के अन्तर्गत आते हैं। प्रो0 ई0 एस0 'ली' ने प्रतिकूल कारकों को अन्तर्वती बाधाओं की संज्ञा दी है। अन्तर्वती बाधाओं के अन्तर्गत भौतिक, वित्तीय, शैक्षणिक एवं कानून सम्बन्धी बाधायें सम्मिलित हैं।

### 3. राजनैतिक कारक

राजनीतिक कारण भी प्रवसन में सहायक होते हैं। आक्रमण, विजय, नये देशों में उपनिवेशों की स्थापना प्रमुख राजनीतिक कारण हैं। भारत में मुगलों के आने से पूर्व महमूद गजनबी, गोरी, तैमूर की सेनाओं ने भारत पर आक्रमण किया। उस समय बहुत से लोग उनके साथ आये और यहीं बस गये। स्पेन और पुर्तगाली लैटिन अमेरिका के देशों में जाकर बस गये। यह सभी प्रदेश उपनिवेशों की स्थापना से बसना प्रारम्भ हुए। क्लात् प्रवसन भी विश्व के अनेक देशों में पाये जाते हैं। अफ्रीका से दासों का ले जाना और उनका वहीं जाकर बस जाना, इसके उदाहरण हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि मानव गतिशील प्राणी है। जब किसी क्षेत्र में जनसंख्या का भार उसके वार्षिक साधनों की तुलना में असन्तुलित हो जाता है। तो वह अपने मूल स्थान को छोड़कर अन्यत्र चला जाता है। इस तथ्य को ब्लाशों ने स्पष्ट किया कि श्जब मधुमक्खियों का छत्ता पूरी तरह भर जाता है तो मक्खियां उसे छोड़कर अन्यत्र चली जाती हैं। सभी कालों में ऐसा ही इतिहास रहा है। जिसमें कि व्यक्ति और समाज अपने आप को पाता है।

### 4. धार्मिक कारण

तीर्थ स्थलों के कारण विश्व के एक भाग से दूसरे भागों की ओर स्थानान्तरण होने लगता है। प्रतिवर्ष हजारों मुसलमान भारत से मक्का, मदीना तथा यहूदी येरूसलम और रोमन कैथोलिक वेटिकन सिटी की यात्रा करते हैं। यह स्थानान्तरण मुख्यतः अस्थायी होता है।

### 5. सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक

किसी समुदाय विशेष में पारिवारिक कलह, ऋणग्रस्तता, बेरोजगारी, प्रचलित रीति-रिवाजों, व्यवहारों और विश्वासों से विरक्ति आदि कारक अन्यत्र प्रवास पर चले जाने को बाध्य करते हैं।

स्थानान्तरण व प्रवास की मात्रा एवं प्रतिशत देश, काल व परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। विकसित देशों में उच्च स्थानान्तरणध्प्रवास दृष्टिगोचर होते हैं। जबकि अल्प विकसित देशों में अत्यल्प गतिशीलता मिलती है।

**6. अन्य कारक**

अन्य कारकों में नगरों का आकर्षण, सामाजिक सुरक्षा का अभाव, फैशन परस्ती, उन्नत जीवन जीने का आकर्षण, धन कमाने की ललक भी प्रवास को बढ़ावा देते हैं।

## जनसंख्या स्थानान्तरण का स्वरूप

आव्रजन एवं प्रव्रजन जनसंख्या स्थानान्तरण के स्वरूप हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। आव्रजन का तात्पर्य किसी क्षेत्र या प्रदेश से मानव का आगमन, भारतवर्ष में पाकिस्तान से हिन्दुओं का एवं पाकिस्तान में भारत से मुसलमानों का स्थानान्तरण आव्रजन का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है। अध्ययन क्षेत्र में गोरखपुर, नेपाल व बिहार प्रान्त के विभिन्न जनपदों से जनसंख्या का आव्रजन हुआ है। कानपुर, नोएडा एवं पश्चिमी बंगाल, मुम्बई, दिल्ली, पाकिस्तान, मलाया, वर्मा, सिंगापुर, नेपाल आदि स्थानों से जनपद अम्बेडकर नगर में जनसंख्या का आव्रजन एवं प्रव्रजन हुआ है। प्रव्रजन के अन्तर्गत मानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रस्थान करता है। 2004-2014 के बीच जापान से प्रतिवर्ष 1,20,000 मनुष्यों का प्रव्रजन होता रहा। जनपद में 2012 की जनसंख्या में कुलियों का प्रव्रजन फीजिंग एवं मलेशिया में हुआ। इसके अतिरिक्त जनपद अम्बेडकर नगर के मूल निवासी भी रोजगार शिक्षा के लिए देश-विदेश में प्रव्रजित हुए हैं।

## जनसंख्या का ग्रामीण भाग में स्थानान्तरण

अध्ययन क्षेत्र में सन् 2018 में कुल जनसंख्या का 23.31 प्रतिशत ग्रामीण स्थानान्तरण हुआ है। ग्रामीण स्थानान्तरण में पुरूषों की संख्या 8.06 प्रतिशत एवं स्त्रियों का प्रतिशत 91.94 है। जो पुरूषों की अपेक्षा सर्वाधिक है। कुल ग्रामीण जनसंख्या के स्थानान्तरण का सर्वाधिक स्थानान्तरण जनपदान्तर्गत 69.95 प्रतिशत हुआ है। जिसमें स्त्रियों एवं पुरूषों का प्रतिशत क्रमशः 91.67 एवं 8.33 है। तालिका संख्या रू 4.2 से स्पष्ट है।

**तालिका संख्याः 2 ग्रामीण जनसंख्या का स्थानान्तरणः 2018**

| मद | पुरूष | महिला | कूल |
|---|---|---|---|
| गणना के जिले में अन्यत्र पैदा हुए | 8.33 | 91.67 | 69.65 |
| राज्य के अन्य जिले में पैदा हुए | 6.52 | 93.48 | 29.16 |
| भारत के अन्य प्रान्तों में पैदा हुए | 36.81 | 69.89 | 0.89 |
| कुल स्थानान्तरण | 8.06 | 91.94 | 100.00 |

जनपद में यह स्थिति मुख्यतया अन्तर्जिला वैवाहिक प्रतिरूप के फलस्वरूप विद्यमान है। इस प्रकार अन्य जिलों से 29.16 प्रतिशत एवं अन्य प्रान्तो से सबसे कम 0.89 प्रतिशत ग्रामीण स्थानान्तरण हुआ। वैवाहिक पक्ष के फलस्वरूप जनपद में सर्वाधिक स्थानान्तरण स्त्रियों का हुआ है।

जनपद में अविवाहित पुरूष एवं स्त्री का स्थानान्तरण विवाहित पुरूष व स्त्री की अपेक्षा कम हुआ है। सर्वाधिक स्थानान्तरण विवाहित स्त्रियों का है जो शादी के बाद अपनी ससुराल चली जाती हैं। नगरीय लिंगायु एवं संरचना का स्थानान्तरण स्पष्ट है।

कि 0-14 आयु वर्ग में पुरुषों का कुल स्थानान्तरण 20.8 प्रतिशत एवं स्त्रियों का 15.9 प्रतिशत हुआ है। इससे अधिक आयु वर्ग में पुरुषों का 16.0 एवं स्त्रियों का 15.6 प्रतिशत हुआ है। इस आयु में विधवाओं का प्रतिशत 51.2 प्रतिशत, विधुरों 18.3 प्रतिशत की अपेक्षा अधिक है। विधवाध्विधुर श्रेणी में जैसे आयु बढ़ती गयी है वैसे स्थानान्तरित जनसंख्या में भी अधिकता होती गयी है, क्योंकि वर्तमान स्वास्थ्य सेवाओं की सुविधाओं के फलस्वरूप ऊँची आयु में भी विधवाध्विधुर देखे जाते हैं। अविवाहितों के सभी आयु वर्गों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों का स्थानान्तरण अधिक हुआ है।

जनपद में नगरीय लिंगायु एवं वैवाहिक संरचना के अनुसार कुल विवाहितों का स्थानान्तरण कुल अविवाहितों की अपेक्षा बहुत अधिक हुआ है। जिसमें सर्वाधिक स्थानान्तरण स्त्रियों का हुआ है

## स्थानान्तरण का प्रभाव

मानव के स्थानान्तरण या प्रव्रजन की प्रक्रिया से सामाजिक, आर्थिक विकास तो होता है परन्तु सामाजिक, सांस्कृतिक समस्यायें भी उद्भूत होती हैं। जनसंख्या के प्रवास का भी श्रीगणेश भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनैतिक कारणों से हुआ करता है। इससे किसी स्थान, क्षेत्र अथवा देश के आर्थिक विकास की गति तो अवश्य मिलती है। परन्तु क्षेत्र अथवा देश की जनसंख्या के लिए अनेक समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। जैसे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक का सन्तुलन आदि। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद या योजना काल में विकास की प्रक्रिया में गति अवश्य आयी है। परन्तु यह गति नगरीय औद्योगिक केन्द्रों तक ही सीमित रह गयी है। भारत का ग्रामीण क्षेत्र इससे वंचित ही रहा। इधर हाल के वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर सरकार

www.ignited.in

ध्यान दे रही है। परन्तु पूरा लाभ समयानुसार उचित व्यक्ति को नहीं मिल पाता है।

## उपसंहार

एडवर्ड रास' ने प्रव्रजन के महत्व को किसी क्षेत्र अथवा देश के सामाजिक, आर्थिक विकास के सन्दर्भ में स्वीकार किया है। उनके अनुसार आवास प्रवास की सतत् प्रक्रिया द्वारा कोई भी प्रजाति जब अपने मूल स्थान से दूर जाती है तभी उसका विकास होता है। प्रव्रजन की प्रक्रिया के फलस्वरूप भावात्मक एकता के अतिरिक्त सामाजिक समन्वय व सांस्कृतिक प्रसरण को भी बल मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर बढ़ते प्रवास की प्रक्रिया के कारण ग्रामीण क्षेत्रों की भूमि पर दबाव कम होने लगा है। साथ ही साथ ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक आर्थिक विकास को दिशा मिलती है। जनपद में इस प्रकार के प्रव्रजनशुरू हो रहे ळे

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बघेल, किरण: जनांकिकी एवं भारत में जनस्वास्थ्य, पुष्पराज प्रकाशन, रीवा, 1985.

2. भारत, 2004, वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,, वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पटियाला हाउस, नई दिल्ली, 2004.

3. मजूमदार, डी.एन.: एक औद्योगिक शहर की सामाजिक परिच्छेदिका (कानपुर), शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, 1980.

4. मिश्र, के. के. एवं नामदेव, आर. सी.: 'सामाजिक सुविधाओं का स्थानिक वितरण एवं नियोजन: उरई तहसील (उ०प्र०) का एक प्रतीक अध्ययन, भू-विज्ञान पत्रिका, वाराणसी, 1996.

5. मिश्रा, डी.के.: जनसंख्या दबाव एवं खाद्यापूर्ति: जनपद जौनपुर का एक प्रतीक अध्ययन, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, गोरखपुर, 1998.

6. मिश्रा, दिनेश कुमार: 'जनपद जौनपुर (उत्तर प्रदेश) की जनसंख्या एक भौगोलिक विश्लेषण', शोध-प्रबन्ध, बी.एच.यू. वाराणसी, 1987.

7. यादव, सी. एस.: "सादात विकास खण्ड (जनपद गाजीपुर) में जनसंख्या की गत्यात्मकता एवं परिवार कल्याण: एक भौगोलिक विश्लेषण, शोध-प्रबन्ध (अप्रकाशित), डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद 2003.

8. यादव, हरी राम: नगरों में फुटकर व्यवसाय, राधा पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली, 2000.

9. रफ्तुआर, विशाल रंजन: जनसंख्या का बेतहाशा बेलगाम काफिला, सामयिक लेख, प्रतियोगिता दर्पण, हिन्दी मासिक, फरवरी, 1996.

10. राम, वासुदेव: 'गाजीपुर जनपद में सामाजिक-आर्थिक विकास एवं अवस्थापनात्मक नियोजन'; शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, 1996

11. लाल, हीरा: जनसंख्या भूगोल, बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 1989. लाल, हीरा: जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 1997.

**Corresponding Author**

**Abhishek Kumar Tiwari***

Research Scholar